RUSSIA WORKSHOP – JULY 2019
Kabir session 2: death-transiency-delusion

J = Jaipur manuscript, 1615-21
S = Jaipur ms number as given in Callewaert's *Millennium Kabir*, followed by # = *Millennium* poem number

J84 - S85#110

नर जांणैं अमर मेरी काय़ा ॥ घर घर व़ात[1] दुपहरी छाय़ा । टेक ॥
मारग छोरि कुमारग जोव़ै ॥ आपन मरै और कूं रोव़ै ।१।
कछू ऐक कीय़ा कछू य़ेक करंणां ॥ धंधा बहुत निहाइति मरणां[2] ॥२।
जल उदबद औसा संसारा[3] उपजत बिनसत लगै न बारा ।३॥
पांच पांषुरी ऐक सरीरा ॥ क्रिश्न[4] कव़ल दल भुव़र[5] कबीरा ॥४॥८४॥

J87 - S88#114

चलन चलन सब लोग कहत हैं ॥ न जांनौं बैंकुंठ कहां है ॥टेक॥
जौजन ऐक प्रमिति न जांनैं ॥ बातनि हीं बैकुंठ बषांणैं[6] ॥१॥
जब लग है बैकुंठ की आसा ॥ तब लग नहीं हरि के चरंण निव़ासा ॥२॥
कहैं सुनें कैसैं पतिय़ाइय़े ॥ जब लग आप तहां नहीं जाइय़े ॥३॥
कहै कबीर य़हु कहिय़े काहि ॥ साध संगति बैकुंठ हि[7] आहि ॥४॥

J80 - S81#106

राम थोरे दिनन[8] कूं का धन करणां ॥ धंधा बहुत निहाइति मरणां ॥टेक॥
कोटी धज साह हस्ती बंध राजा ॥ क्रिपण कौं[9] धन कौणैं काजा ।१॥
धन कै ग्रबि[10] रांम नहीं जांणां । नागा ह्वै जम पैं गुदरांणां ॥२॥
कहै कबीर चेतहु रे भाई ॥ हंस गय़ा कछू संगि न जाई॥३॥८०॥

---

[1] J141 द्वार, C70 द्वारि.

[2] V84, Gop109;44, *KG*(Gupta) मुगध न चेतै निहचै मरणां; J141 मुगध चेति निहचे मरनां; C70 मुगध न जल चेतै निहचै मरनां.

[3] V84/*KG*(Gupta) जैसा/ज्यूं जल बूंद तैसा संसारा; J141 ज्यूं जल बुंद सकल संसारा; C70 ज्यों अंबुदबुद तैसें सकल संसारा.

[4] J141 चरन.

[5] C70 किस चरन दल भंवर

[6] In MS 1614 the ending is nasalized (the dot is rather faint). Without final nasalization only *MKV* S88 and C35 (बषानै); other MSS give the final nasal vowel appropriate for the correct plural form: A96 बषांणैं; V20 बषानैं; J100 बषानें; Gop25;5 बषांनें.

[7] The text offers two possible ways of segmentation: 1. *baikūṭh-* + *-a*$_4$*; -hi*$_5$ „[the company of saints] is the very paradise"; 2. *baikūṭh-*+*-ahi*$_1$ „[in the company of saints one] is in the paradise".

[8] *KG*(Gupta) दिन.

[9] A89, V80, C67, Gop102;3 कौ, J138 को.

[10] J138 धन के गारे, C67 धन कैं गरै, Gop102;3 धन कैं ग्रब.

J35 - S35#43

कौंन मरै[11] कहु[12] पंडित जणां ॥ सो समझाइ कहौ हम[13] संना[14] ॥टेक॥
मटी माटी रही समाइ ॥ पवनैं पवन लीया संगि लाय ॥१॥
कहै कबीर सुनि पंडित गुंनी ॥ रूप मुवा सब देषै दुनीं ॥३[15]॥३५॥

J33 - S33#41

हंम न मरै[16] मरिहै[17] संसारा ।। हंमकूं मिल्या जीवांवनहारा ।। (टेक)
अब नही मंरू मरण मन मान्यां ।। सोई[18] मुवा जिनि रांम न जान्यां ।।
साकत मरैं संतजन जीवै ।। भरि भरि रांम रसांईन पीवैं ।।
हरि मरिहै तौ हंमहूं मरिहैं ।। हरि न मरै हंम काहे कूं मरिहै ।।
कहै काबीर मन मनहि मिलावा ।। अंमर भये सुष सागर पावा ।।

J45 - S45#57

इब[19] तैं [20] हसि[21] प्रभू मैं कछू नाही ॥ पंडित पढि अभिमांन नसाहीं ॥ टेक ॥
मै मै मै जब लग मै कीन्हां ॥ तब लग मैं करता नहीं चीन्हां ॥१॥
कहै[22] कबीर सुनहु नर नाहा ॥ ना हंम जीवत न मूव[23] ले माहा ॥२॥ ॥४५॥

[prepare only to here]

* * * * *

---

[11] V121 कूंन मूवा, *KV-S* को न मुवा.

[12] A45 कौण instead of कहु.

[13] *KV-S* मोहि

[14] A45 सुनां.

[15] Incorrect number in the ms.

[16] MS3190/S33 and C41 मरै, A43, V36, Gop105;1 and Raj 71;3 मरैं which appears to be the correct grammatical form here; J109 मरिहें; AG325;12 मै न मरउ. In MS3190 there may be anusvāra above the sign रै; even on close inspection of the photocopy it is impossible to decide whether it is a separate dot or an ending of the lower part of the letter र on the upper line.

[17] Only S33 मरहै; A43, J109, C41, Gop105;1 and Raj71;3 (correctly) मरिहै; V36 मरिहै. In MS3190 we have मर at the end of the line; the next line begins with a vertical stroke followed immediately by है : ।है. The form is here interpreted as मरिहै.

[18] MS3190/S33, A43, Raj71;3 सोई with मुवां can be interpreted as sg.; A43 has सोई मूवा; V36 and Gop105;1 have the proper pl. forms तेई मूयै and मुये J109 and C41 read जे मूवा.

[19] V52 अब.

[20] तैं omitted on the line, subsequently added above the first line on the top of the page and interpolated at the proper place by insertion marks (*kākapāda*). *KG*(Gupta) तूं.

[21] A62 हमि, V52 हरि.

[22] A62 कहत.

[23] V52 मूवा.

For your enjoyment: a few more delectable poems on death and delusion.

J82 - S83#108

मेरी मेरी सब जगु[24] करते ॥ मोह मछर तनि[25] धरिते ॥
आगैं मीर[26] मुकादम होते ॥ वै भी गये यूं करते ॥टेक॥
किस की[27] ममा चचा को[28] किस का ॥ किस का पुंगंरा जोई ॥
यहु संसार बाजार मंड्या है ॥ जांणैगा जन कोई ॥१॥
मैं परदेसी काहि पुकारौं ॥ इहां नही को मोरा ॥
यहु संसार ढूंढि सब देष्या ॥ ऐक भरोसा तेरा[29] ॥२॥
षांहि हलाल हरांम निवारैं ॥ भिस्ति तिन्हां कूं होई ॥
पंच तत का मरम न जानैं ॥ दोजगि परैगा[30] सोई ॥३॥
कुंटंब कारंणि पाप कमावै ॥ तूं जांणैं घर मेरा ।
ऐ सब मिले आप सवारथि । इहां नहीं को तेरा ॥४॥
साइर उतरौ पंथ संवारौ । बुरा न किस का[31] करंणां ।
कहै कबीर सुंनहु रे संतौ जाव षसंम कूं भरंणा ॥५॥८२॥

J86 - S87#113

जौ पै रसना राम न कहिबौ ॥ तौ उपजत बिनसत भ्रंमत रहिबौ ॥टेक
जैसी देषि तरवर की छाया ॥ प्रांन गयें को का कर माया[32] ॥१॥
जीवत कछू न कीया परवांनां ॥ मुवां मरंम को का कर जांनां ॥२॥
कंध काल सुष कोउ न सोवै ॥ राजा रांक दोउ मिलि रोवै[33] ॥३॥
हंस सरोवर कवल सरीरा ॥ रांम रसांईन पीवै कबीरा ॥४॥८६॥

---

[24] *KG*(Gupta) दुनियां instread of सब जगु.

[25] V82 चिति.

[26] *KG*(Gupta) पीर.

[27] V82 किस कां.

[28] V82 कूंण, Gop89;17 पुनि, *KG*(Gupta) पुंनि.

[29] In ms. original तोरा corrected to तेरा.

[30] *KG*(Gupta) पडिहै.

[31] *KG*(Gupta) किसी का.

[32] प्रांन गयें को का कर माया: only in S87 (and A95 प्रांन गये ...). V108 has more comprehensible प्रांण गयें कहु का की माया; similarly AG325;8: प्रान गए कहु कां की माइआ. Gop47;13 does not include this verse, A138 is a different *pad* and with A95 has common only the *ṭeka*. The translation and meaning of the variant in S87 and A95 perhaps is „look, [it is] like the shadow of a tree: after death who [remains], to whom pertains / whose [then] is *māyā*?“ (A tree, while it stands, casts a shadow; once it is cut down, the shadow disappears. Similarly with men: when one dies, his *māyā*, the objects of his sensual perception and enjoyment, wealth etc., the whole world of relationships one projects ouside and around himself, also disappears.) Problematic remains the lack of concord in gender of कर and माया, smoothed out in V108 and AG325;8.

[33] A95 has the correct plural form रोवैं.

J83 - S84#109

य़ा मैं[34] क्या मेरा क्या तेरा । लाज न मरतहु[35] कहत घर मेरा ॥ टेक
चारि पहर[36] निस भेरा[37] । जैसैं तरव़रि पंषि बसेरा ॥१॥[38]
जैसैं[39] बनिय़ैं हाट पसारा । सब जग का सो[40] सिरजनहारा[41] ॥२॥
ऐ ले जारे व़ै ले गाडे ॥ इन दुषिय़न[42] दोउं घर छाडे ।३।
कहै कबीर सुनहु रे लोई । हंम तुम बिनसि रहैगा सोई[43] ॥४॥८३॥

J77 – S78#103

देषहु य़हु तन जाता है ॥ घरीं[44] पहर बिलंबौ मेरे[45] भाई जरता है ॥टेक॥
काहे कूं ऐता कीय़ा पसारा ॥ य़हु तन जरि बरि ह्वैगा[46] छारा ॥१।
नव़ तन द्वादस लागी आगी[47] ॥ मुग्ध न चेतै दह दिसि लागी[48] ।२॥[49]
कहै कबीर हंम ब्रितक समांना राम नांम छूटै अभिमांनां ॥३॥७७॥

J72 – S73#96

जीव़रा[50] तूं जाइगौ मैं जांनां ॥
जो देष्या सो बहुरि न पेष्या ॥ माय़ा स्यूं लपटानां[51] ॥टेक॥
ब्याकुल[52] बस्तर किता पहरिबा ॥ का तप बनषंडि बासा ॥
कहा मुगध रे पांहन पूजै ॥ का जल डारै[53] गाता ॥१॥
कहै कबीर सुर मुनि उपदेसा ॥ लोगा पंथि लगाई ॥
सुणौं संत सुमिरौ भगता जन ॥ हरि बिन जंनंम गंमाई[54] ॥२॥

---

[34] Gop89;7 and *KG*(Gupta) रे यामैं.
[35] A92 मरहु, V83 मरत, J140 मरों, C69 मरो, Gop89;7 मरहि, *KG*(Gupta) मरहिं.
[36] Gop89;7 पह.
[37] Gop89;7 and *KG*(Gupta) भोरा.
[38] In J140 and C69 this verse is missing.
[39] In J140 and C69 जैसैं is missing.
[40] V83, C69 सोई, J140 सेइ.
[41] J140 सीरजाइ.
[42] J140 दोषे, C69 धोषै, *KG*(Gupta) इनि दुखि इनि.
[43] J140/C69 घर घर करि बुडो/बूडै जिनि कोइ/कोई.
[44] Interpretation of the dot in the ms. as nasalization sign is uncertain. A86, V77 and *KG*(Gupta) have घडी, Gop109;43 घडी.
[45] Gop109;43 and *KG*(Gupta) रे.
[46] V77, Gop109;43 and *KG*(Gupta) ह्वैहै.
[47] V77 नव तन दह दिसि जारै आगी ।
[48] V77 and Gop109;43 मुगध न चेतै नष सिष लागी ॥ *KG*(Gupta) मुगध न चेतै नष सिष जागी ॥
[49] After verse 2 Gop109;43 inserts verse कांम क्रोध घट भरयौविकारा । आपहि आप जरै संसारा ॥
[50] A81 जीवरा; V73, Gop13;15 जीयरा; AG338;67 जीअरे.
[51] A81माया स्यौं लपटानां; V73 माटी सूं मंन मांनां; Gop13;15 माया सूं मन मांनां; AG338;67 संगि माइआ लपटाना.
[52] A81 व्याकुल („agitated“, „perturbed“, „restless“); V73 and Gop13;15 वाकुल („bark of tree“); AG338;67 बिपल („many“).
[53] A81 पूजैं – डारैं; V73 पूज्यै – डारै; Gop13;15 पूजैं – डारै. The characterisitic construction का + instr. sg. of perfective participle with the meaning „what [is gained] by ...“ appears several times with different verbs and different forms of the loc./instr./erg. ending in the present corpus. This fact, together with other MSS readings (nasalized forms, the unmistakable form पूज्यै in V73) makes the interpretation of these forms as participles preferable to understanding them as finite verbal forms (2nd or 3rd pers. sg. pres.).
[54] A81 गंमाई; V73 गवाई; Gop13;15 गंवाई; AG338;67 has a different variant of the whole verse.

J75 – S76#101

मन रे तन कागद का पुतरा ॥
लागै बूंद बिनसि जाइ छिन मैं ॥ गरब करहिं का इतरा ॥ टेक ॥
माटी षोदहिं भीति उसारहिं ॥ अंध कहैं घर मेरा ॥
आवै तलब बांधि ले चालै ॥ बहुरि न करिहै फेरा ॥१॥
षोट कपट करि यहु[55] धंन जोर्यौ। ले धरती मैं गाड्यौ ।
रोके द्वार[56] सास नहीं निकसै[57] ॥ ठौर ठौर सब छांड्यौ ॥ २॥
कहै कबीर नट नाटिक थाके[58] । मंदला कौंण[59] बजावै ॥
गऐ[60] पषनियां उझरी बाजी । को काहु कै आवै ॥३॥७५॥

[55] Gop109;41 करि परि हु.
[56] J132 रोक्या कंठ, Gop109;1 रोक्या घटु, *KG*(Gupta) रोक्यौ घट कि.
[57] J132 निस्रे, Gop109;41 निसरै.
[58] *MKV* segments नट नाटि कथा के.
[59] A84 कोई न.
[60] J132 सो.